

वसंत जमशेदपुरी
जमशेदपुर, झारखंड

लघुकथा

देवता या दानव

अत्यधिक प्रयास के बावजूद भी जब वह डॉक्टर की पकड़ से न छूट सकी तो लाचार हो उसने डॉक्टर की वासना के आगे आत्मसमर्पण कर दिया|

वह चुपचाप लुटती रही,सिसकती रही और सामने बेहोश पड़ी अपनी वृद्धा माँ को देखती रही,जिसे थोड़ी देर पहले ही डॉक्टर ने बेहोशी का इंजेक्शन लगाया था और होश आने में लगभग घंटे भर का समय था|

अचानक शाम को उसकी माँ के पेट में दर्द उठा था और वह डॉक्टर को घर बुला लाई थी,इस आवागमन में रात होने को आई थी,और जब डॉक्टर ने उसे ललचाई नजरों से देखा था तभी वह शंकित हो उठी थी पर दूसरा कुछ उपाय भी न था,गाँव में वह अकेला डॉक्टर जो था|

कुछ देर बाद वृद्धा ने कराह कर आँखें खोल दी|

-"तबियत कैसी है?"डॉक्टर ने पूछा|

-"अब जान में जान आई है,पहले तो दर्द से प्राण ही निकले जा रहे थे"

-"अच्छा ये कैप्सूल हैं,समय से लेती रहें,शीघ्र स्वस्थ हो जाएँगी"

-"फीस दे दो बेटा! डॉक्टर को"

-"नहीं-नहीं,आप ठीक हो जाइए,यही मेरे लिए सबसे बड़ी फीस है" कह डॉक्टर ने मुस्कुरा कर वृद्धा की बेटी को देखा मानो कहना चाह रहा हो कि फीस तो मैंने वसूल ली|

वृद्धा कह रही थी"डॉक्टर नहीं देवता है यह"

पास बैठी वृद्धा की बेटी निर्णय नहीं कर पा रही थी कि डॉक्टर"देवता है या दानव"

बदलते रिश्ते

घर में कोहराम मचा हुआ था,चीख-पुकार के कारण आसमान फटा जा रहा था|

राम बाबू का इकलौता बेटा ललित सड़क-दुर्घटना में मर गया था|हाथों की मेहँदी अभी छूट भी न पाई थी कि मुग्धा पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा था|वह दहाड़ मार कर रो रही थी,राम बाबू की पत्नी विलख-विलख कर अपना शोक प्रगट कर रही थी|राम बाबू बाहर बरामदे में गहरी चिंता में डूबे सहानुभूति प्रगट करने आए मित्रों के बीच बैठे थे,ललित की छोटी बहन गीता,स्वयं के आँसू नहीं रोक पा रही थी किंतु भाभी को ढाँढ़स बँधा रही थी|अचानक राम बाबू मित्रों के बीच से उठ कर अंदर आए और शोकसंतप्त पत्नी से बोले-"क्यों रो-रो कर पागल हो रही हो,क्या हो गया जो ललित मर गया तो? दो महीने बाद गीता की शादी रोहित से कर ही देंगे पढ़ा-लिखा इंजीनियर बेटा घर में आ जाएगा,वैसे हम लोगों को और जीना ही कितने दिन है?"

मुग्धा अभी कुछ सोच पाती कि इसके पूर्व ही राम बाबू उसकी ओर घूम पड़े|

"मुग्धा!आज से तुम हमारी बहू नहीं बेटी हो,यदि तुम्हें कोई आपत्ति न हो तो हम तुम्हारी शादी कोई सुयोग्य वर देख कर कर देंगे|आज से तुम मुझे अपना पिता,सावित्री को माँ तथा गीता को अपनी छोटी बहन समझो|"

इतना कह राम बाबू बाहर जा अरथी उठाने की तैयारी में लग गए,सावित्री ने उठ कर मुग्धा को गले लगा लिया|

"चुप रहो बेटी!जो हुआ उसे भूल जाओ वक्त के साथ रिश्ते बदल ही जाते हैं|"

"हाँ,दीदी! माँ ठीक ही कह रही है"गीता ने माँ का समर्थन करते हुए कहा|